गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

# गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 249
दि. 09.01.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा


# गूगल पर ज्ञानपिपासु सर्च कर रहे हैं 'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' पुस्तक

**(जीएनएस)**। गांधीनगर : आततायी महमूद गजनवी के सोमनाथ मंदिर पर किए गए आक्रमण को 1000 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस विदेशी आक्रमणकारी द्वारा हुआ आक्रमण भारत की अस्मिता पर कुठाराघात समान था। इस एक हजार वर्ष के संदर्भ में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लिखे गए विशेष लेख में एक विशेष पुस्तक का उल्लेख किया गया था। इस पुस्तक के बारे में जानने के लिए जिज्ञासु गूगल सर्च इंजन चला रहे हैं।

यह पुस्तक यानी कनैयालाल माणेकलाल मुनशी द्वारा 1951 में लिखी गई 'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' ! इस पुस्तक में भगवान श्री सोमनाथ के मंदिर के बारे में ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व का परिचय दिया गया है। प्रधानमंत्री द्वारा हुए उल्लेख के कारण हाल में यह पुस्तक चर्चा एवं पठन के केन्द्र में है। ऐसे में यह इस पुस्तक के बारे में और जानना रुचिप्रद होगा।

गुजरातियों के लिए गुजरात की अस्मिता के ज्योतिर्धर क. मा. मुनशी परिचय के मोहताज नहीं है। वे राजनीतिक पुरुष के अलावा एक अच्छे लेखक थे। उनकी पुस्तकों के केन्द्र में इतिहास एवं सांस्कृतिक आदि विषय रहे हैं। गुजरातियों को अंग्रेजी में लिखी पुस्तकें पढ़ने में बहुत खास आदत नहीं है। अंग्रेजी में भी गुजरात तथा गुजरात के इतिहास के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, जिसमें कनैयालाल मुनशी को भी सिरमौर माना जा सकता है।

उनके द्वारा लिखित 'पाटणनी प्रभुता', 'जय सोमनाथ', 'गुजरातनो नाथ', 'भग्न पादुका', 'कृष्णावतार भाग 1 से 7' जैसी पुस्तकें पढ़ने से गुजरात के इतिहास के अलावा धार्मिक विभूतियों की दिलचस्प जानकारी स्थल-काल के साथ जानने को मिलती है।

सोमनाथ – द श्राइन इटर्नल पुस्तक में कनैयालाल मुनशी ने भगवान श्री सोमनाथ मंदिर का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक परिचय दिया है। उन्होंने सोमनाथ मंदिर को भारत की अस्मिता का प्रतीक बताया है। क्यों यह मंदिर भारत की सांस्कृतिक धरोहर के लिए महत्वपूर्ण है ? इसका अहसास इस पुस्तक को पढ़ने से आ सकता है। हाल में सोमनाथ में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है, तब इस पुस्तक के बारे में भी जानना महत्वपूर्ण है।

यह पुस्तक भारतीय विद्या भवन की 'बुक्स यूनिवर्सिटी' श्रृंखला अंतर्गत प्रकाशित की गई है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूलभूत मूल्यों का आधुनिक ज्ञान के साथ संयोजन करना है।

मुनशीजी ने इस पुस्तक का प्रथम संस्करण मई-1951 में सोमनाथ मंदिर की पुनर्स्थापना तथा ज्योतिर्लिंग प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर लिखा था। लेखक स्वयं स्वीकार करते हैं कि उन्होंने शैक्षणिक विद्वता के दावे के बिना, बल्कि एक अत्यंत श्रद्धालु तथा इतिहास के जिज्ञासु के रूप में यह पुस्तक बहुत ही कम समय में तैयार की थी, जिससे सोमनाथ के इतिहास को लोगों के समक्ष रखा जा सके।

इस पुस्तक का उद्देश्य उच्च शिक्षा एवं संस्कार देना है। इस पुस्तक द्वारा मानव गरिमा एवं नैतिक व्यवस्था (मोरल ऑर्डर) की स्थापना करने का प्रयास किया गया है, जिससे मनुष्य भगवान का सच्चा अंश बन सके।

पुस्तक मुख्यतः चार भागों में बँटी हुई है। पहले भाग में सोमनाथ की पौराणिक कथाएँ तथा इतिहास है, दूसरे भाग में रोमांस इन स्टोन यानी पत्थरों में उत्कीर्णित स्थापत्य है, तीसरे भाग में पुरातात्त्विक उत्खनन (एक्सकैवेशन्स) द्वारा मिले प्रमाण हैं और चौथे भाग में मुस्लिम इतिहासकारों के उल्लेखों तथा विभिन्न शिलालेखों का विवरण दिया गया है।

लेखक ने सोमनाथ को 'चंद्रना देव' (लॉर्ड ऑफ सोम) के रूप में वर्णित किया है और प्रभास क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व की चर्चा की है। मंदिर राख से पुनः खड़े होने वाले फिनिक्स पक्षी की तरह राख से पुनः उठ खड़ा होकर अनेक विनाश के बाद भी अजेय रहा है। पुस्तक में भगवान श्री कृष्ण के देहोत्सर्ग के पवित्र स्थान का भी उल्लेख है।

इस पुस्तक में सोमनाथ पर हुए आक्रमणों का विस्तृत इतिहास है। 1025 में महमूद गजनवी द्वारा किए गए विनाश से लेकर अलाउद्दीन खिलजी तथा औरंगजेब के काल तक के कठिन काल का वर्णन यहाँ देखने को मिलता है। मुनशीजी ने इस विनाश को केवल इमारत का विध्वंस नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मा पर हुए आघात के रूप में प्रस्तुत किया है।

पुस्तक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सोमनाथ के आधुनिक पुनरुत्था पर केन्द्रित है। 13 नवंबर, 1947 को सरदार वल्लभभाई पटेल ने जर्जर मंदिर के प्रांगण में समुद्री जल के साथ जो संकल्प किया था, उसे क. मा. मुनशी ने भारत के गौरव की पुनर्स्थापना के रूप में आलेखित किया है।

पुस्तक में बी. के. थापर द्वारा किए गए वैज्ञानिक उत्खनन की रिपोर्ट भी शामिल है। इस विभाग में पृथ्वी के गर्भ से प्राप्त प्राचीन मंदिर के स्तरों, शिलालेखों और मूर्तियों के आधार पर मंदिर के प्राचीन स्थापत्य की कड़ियों को जोड़ा गया है, जो इतिहास के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

पुस्तक के नए संस्करणों में नए मंदिर के निर्माण की प्रगति के बारे में बताया गया है। नए मंदिर को 'कैलास महामेरु प्रसाद' के रूप में परिचित कराया गया है, जिसकी ऊँचाई 155 फीट है। पुस्तक में अनेक रेखाचित्र तथा फोटोग्राफ हैं, जो सोमनाथ की कलात्मक भव्यता के दर्शन कराते हैं।

'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' केवल इतिहास की पुस्तक नहीं है, बल्कि भारतीय प्रजा की अखंडा श्रद्धा की प्रती है। मुनशीजी के मतानुसार सोमनाथ अनंत ज्योति है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी भारत को उसकी सांस्कृतिक जड़ों के साथ जोड़कर रखती है तथा

**▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उनके लेख में उल्लेखित पुस्तक के बारे में जानने को लेकर हो रहा है सर्च**

**▸▸ सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार अवसर पर लिखी गई पुस्तक में आलेखित है हमारी अस्मिता का इतिहास**

सोमनाथ के आंगन में 'स्वाभिमान पर्व' का मंगल आरंभ

## राजकोट से विशेष ट्रेन द्वारा सोमनाथ पहुंचे हजारों शिवभक्त; 'जय सोमनाथ', 'हर हर भोले' के जयघोष से गूंज उठा पूरा स्टेशन परिसर

### एक हजार वर्षों के संघर्ष और आस्था की विजय गाथा को स्मरण कर भावविभोर हुए श्रद्धालु

**(जीएनएस)**। गांधीनगर, 08 दिसंबर : भारतीय संस्कृति के राष्ट्रीय स्वाभिमान व अजेय आस्था के प्रतीक प्रथम ज्योतिर्लिंग श्री सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में 08 से 11 जनवरी तक 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का भव्य शुभारंभ हुआ है। यह महोत्सव केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि सोमनाथ के एक हजार वर्षों के संघर्ष, बलिदान और पुनर्निर्माण की अप्रतिम गाथा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक माध्यम है। इस पर्व में सहभागी होने के लिए राज्य सरकार द्वारा चार महानगरों से विशेष ट्रेनें चलाई गई हैं। इसी क्रम में आज राजकोट से विशेष ट्रेन सोमनाथ रेलवे स्टेशन पर पहुंची। 'हर हर भोले' और 'जय सोमनाथ' के गगनभेदी जयघोष से पूरा स्टेशन परिसर गूंज उठा। सोमनाथ का इतिहास विनाश के सामने सृजन की विजय की कथा है। वर्ष 1026 में महमूद गजनवी के आक्रमण से लेकर सदियों तक विदेशी आक्रमणकारियों ने इस आस्था के केंद्र को खंडित करने का प्रयास किया, लेकिन हर बार भारतवर्ष के वीरों ने अपने रक्त से इस धरती की रक्षा की। इस पर्व के माध्यम से हमीरजी गोहिल तथा वेगडाजी भील जैसे अनगिनत शहीदों के बलिदान को श्रद्धांजलि दी जा रही है। श्रद्धालुओं के लिए यह केवल दर्शन नहीं, बल्कि पूर्वजों के संघर्ष की स्मृति भी है।

**-:यात्रियों की हृदयस्पर्शी प्रतिक्रियाएं:-**

**दीपकभाई दवे (राजकोट)**

"हम केवल ट्रेन में बैठकर दर्शन करने नहीं आए हैं, हम अपने गौरवशाली इतिहास को नमन करने आए हैं। सोमनाथ पर हुए अनेक आक्रमणों के बावजूद आज यह भव्य शिखर खड़ा है, जो हमारी संस्कृति की जीवंतता को दर्शाता है। सरकार के इस 'स्वाभिमान पर्व' के आयोजन से हमें सोमनाथ के 1000 वर्षों के संघर्ष की गाथा में सहभागी बनने का जो अवसर मिला है, वह अलौकिक है।"

**देवांग जानी (युवा श्रद्धालु – सुरेन्द्रनगर)**

"राजकोट से सीधी ट्रेन मिलने से हमारी यात्रा सरल हो गई। सरदार पटेल ने जिस प्रकार इस मंदिर का पुनर्निर्माण कराया और आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जिस तरह इसे विश्वस्तरीय बना रहे हैं, उसे देखकर लगता है कि हमारा स्वाभिमान आज सही अर्थों में सम्मानित हो रहा है।"

**जगदीशभाई परमार (राजकोट)**

"यहाँ स्वाभिमान पर्व में जुड़कर अनुभव हुआ कि सोमनाथ के लिए कितने लोगों ने बलिदान दिया है। ट्रेन की सुविधा देकर सरकार ने हमें इस महान विरासत से जुड़ने का जो अवसर दिया है, उसके लिए हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी तथा सरकार के आभारी हैं।"

उल्लेखनीय है कि आगामी तीन दिनों तक सोमनाथ में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सोमनाथ की पौराणिक गाथा प्रस्तुत की जाएगी। 11 जनवरी तक चलने वाले इस महोत्सव में अहमदाबाद, सूरत और वडोदरा से भी श्रद्धालु विशेष ट्रेनों के माध्यम से सोमनाथ के सान्निध्य में पहुंचेंगे।

## स्वाभिमान पर्व में शिव भक्तों के स्वागत के लिए सोमनाथ सज्ज : 'जय सोमनाथ' के नाद के साथ तैयारियां पूर्ण

### सोमनाथ मंदिर तथा आसपास के क्षेत्रों में रोशनी और साज-सज्जा के साथ शिव आराधना

**(जीएनएस)**। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व, अटूट आस्था के 1000 वर्ष के उपलक्ष्य में 8 से 10 जनवरी स्वाभिमान पर्व को श्रद्धापूर्वक उत्सव का प्रारंभ हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 10–11 जनवरी को सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर सोमनाथ में उपस्थित रहेंगे। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व की पूर्व संध्या पर राज्य सरकार के मार्गदर्शन में पूरे सोमनाथ क्षेत्र में सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के लिए विभिन्न व्यवस्थाएं और जनता के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। विभिन्न विभागों के

सचिव एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा स्वाभिमान पर्व अंतर्गत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में व्यवस्थाएं सुचारु रूप से बनी रहें, इसके लिए अलग-अलग टीमें गठित कर कार्य पूर्ण किया गया है। 7 जनवरी की रात को सोमनाथ के विभिन्न मार्गों को अत्यंत सुंदर ढंग से रोशनी और आध्यात्मिक चेतना के प्रतीकों से सजाया गया। त्रिवेणी रोड, हमीरसिंह सर्कल, शंख सर्कल, भीडिया-पाटण रोड, सर्किट हाउस रोड तथा सोमनाथ मंदिर क्षेत्र के मार्गों को साज-सज्जा, रोशनी, शिव आराधना के चित्रों, ध्वजों, सड़कों पर भगवान शिव की मूर्तियों सहित विभिन्न तैयारियों से सजाया गया है, जिससे संपूर्ण सोमनाथ सज्ज हो उठा है। समग्र गुजरात से शिव भक्त ट्रेन और बसों के माध्यम से सोमनाथ पहुंच रहे हैं। तीन दिनों तक होने वाले अखंड 'ओमकार' मंत्रोच्चार से सोमनाथ का वातावरण अलौकिक अनुभूति के साथ दिव्य बन गया है। वर्ष 1026 से 2026 तक के संघर्ष, शौर्य, वीरता, स्वाभिमान और अटूट श्रद्धा के 1000 वर्षों के साथ स्वाभिमान पर्व का यह संदेश नई पीढ़ी को भारत की शाश्वत सनातन संस्कृति की गाथा को आत्मसात करने की प्रेरणा देता है।

## अहमदाबाद मंडल में आरपीएफ की सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई से यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित

**(जीएनएस)**। पश्चिम रेलवे, अहमदाबाद मंडल के रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के अधिकारी एवं जवान यात्रियों के जीवन, सम्मान एवं संपत्ति की सुरक्षा के लिए निरंतर सतर्क एवं प्रतिबद्ध रहते हैं। पिछले तीन दिनों के दौरान आरपीएफ द्वारा सतर्कता, त्वरित निर्णय एवं समन्वित कार्रवाई के माध्यम से कई सराहनीय कार्य किए गए हैं, जिनमें यात्रियों के कीमती सामान की सुरक्षित वापसी, चलती ट्रेन में गिरने से महिला यात्री की जान बचाना, भटकी हुई युवती को उसके परिजनों तक सुरक्षित पहुँचाना तथा नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर ले जाने के मामले में त्वरित रेस्क्यू शामिल हैं।

**1. चलती ट्रेन से गिरने से महिला यात्री की जान बचाई**

दिनांक 06.01.2026 को अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 01, गेट नंबर 04 पर ड्यूटी पर तैनात महिला हेड कॉन्स्टेबल जागृति चौधरी द्वारा समय लगभग 09:40 बजे प्लेटफॉर्म के मध्य गश्त के दौरान एक महिला यात्री को चलती गाड़ी में चढ़ने से मना किया गया। इसके बावजूद महिला द्वारा लापरवाहीपूर्वक चलती ट्रेन में चढ़ने का प्रयास किया गया, जिससे उसका संतुलन बिगड़ गया और वह ट्रेन एवं प्लेटफॉर्म के गैप में गिरने लगी। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए कॉन्स्टेबल जागृति चौधरी ने तत्परता दिखाते हुए महिला यात्री को पकड़कर तुरंत ट्रेन से दूर खींच लिया, जिससे एक बड़ी दुर्घटना टल गई और महिला की जान बच सकी। उक्त महिला यात्री का नाम पारवाता बाई (उम्र 65 वर्ष), निवासी येवतमाल, अमरावती (महाराष्ट्र) बताया गया, जो सवारी गाड़ी संख्या 22940 के S/4 कोच, सीट नंबर 64 पर ठाट बदनेरा से जामनगर तक यात्रा कर रही थीं।

**2. चोरी हुआ कीमती मोबाइल एवं पर्स सफलतापूर्वक बरामद**

दिनांक 05.01.2026 को समय 09:07 बजे, कंट्रोल रूम के माध्यम से गाड़ी संख्या 22738 सिकंदराबाद एक्सप्रेस, कोच S-3, सीट नंबर 47 में यात्रा कर रही महिला यात्री श्रीमती रिती कुमारी द्वारा रेल मदद के माध्यम से सूचना दी गई कि अहमदाबाद स्टेशन आगमन पर नींद से जागने पर उनका पिंक रंग का पर्स, जिसमें एक iPhone मोबाइल (अनुमानित मूल्य 90,000) एवं 500/- नगद थे, चोरी हो गया है। CPDS (क्राइम प्रिवेंशन डिटेक्शन टीम) इंचार्ज सहायक उपनिरीक्षक (ASI) मान सिंह ने तत्परता दिखाते हुए शिकायतकर्ता के पति श्री कन्हैयालाल शर्मा से संपर्क कर मोबाइल का नंबर एवं IMEI ID प्राप्त की। आधुनिक तकनीक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए मोबाइल की लोकेशन ट्रेस की गई, जिससे मोबाइल के पालनपुर स्टेशन के निकट होने की जानकारी मिली। इस सूचना को तत्काल DSCR (डिवीजनल सिक्यूरिटी कंट्रोल रूम) अहमदाबाद एवं संबंधित निरीक्षकों के साथ साझा किया गया। तत्पश्चात निरीक्षक, पालनपुर द्वारा खोजबीन कर मोबाइल फोन रेलवे ट्रैक के पास एक गैंगमैन से बरामद किया गया, जिसने पर्स एवं मोबाइल को लावारिस हालत में मिलने की जानकारी दी। इस प्रकार आरपीएफ की सतर्कता एवं तकनीकी दक्षता से यात्री के कीमती सामान को सुरक्षित रिकवर किया गया।

**3. गलत ट्रेन से पहुँची युवती को सुरक्षित परिजनों तक पहुँचाया**

दिनांक 07.01.2026 को समय 12:00 बजे, अहमदाबाद स्टेशन प्लेटफॉर्म संख्या 01, गेट नंबर 04 पर एक युवती महिला हेड कॉन्स्टेबल जागृति चौधरी के पास सहायता हेतु आई। युवती ने हिंदी न आने की बात बताते हुए अपना नाम रोस रविना (उम्र 21 वर्ष), निवासी गाँव मिरल, जिला गुमला, झारखंड बताया तथा गलत ट्रेन में बैठकर अहमदाबाद पहुँचने की जानकारी दी। उप निरीक्षक (SIPF) बीजेन्द्र सिंह एवं स्टाफ द्वारा युवती को 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर के पास ले जाया गया, जहाँ उसके परिजनों से संपर्क किया गया। परिजनों द्वारा बताया गया कि उसका भाई गौतम उसे लेने अहमदाबाद आ रहा है। आवश्यक कागजी कार्रवाई पूर्ण कर युवती को सुरक्षित रूप से चाइल्ड हेल्पलाइन के सुपुर्द किया गया।

**4. नाबालिग लड़की का अपहरण मामला सुलझाया**

दिनांक 07.01.2026 को समय 00:03 बजे, DSCR (डिवीजनल सिक्यूरिटी कंट्रोल रूम) अहमदाबाद द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि एक 17 वर्षीय नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर अपहरण कर लिया गया है, जो ट्रेन संख्या 19166 (अहमदाबाद–साबरमती एक्सप्रेस) में यात्रा कर रही है। मामले की गंभीरता को देखते हुए निरीक्षक, अहमदाबाद के निर्देशन में गठित CPDS (क्राइम प्रिवेंशन डिटेक्शन टीम) टीम द्वारा ट्रेन के अहमदाबाद आगमन पर गहन चेकिंग की गई। चेकिंग के दौरान कॉन्स्टेबल रामावतार स्वामी एवं कॉन्स्टेबल नन्नू राम मीणा ने संदिग्ध लड़का-लड़की को रोका, जो प्राप्त फोटो से मेल खाते पाए गए। पूछताछ में संतोषजनक उत्तर न मिलने पर दोनों को डिटेन किया गया। बाद में अहमदाबाद क्राइम पुलिस टीम को सूचित कर अपहरण के मामले में अग्रिम कार्रवाई हेतु लड़की एवं आरोपी को उनके सुपुर्द किया गया तथा संबंधित थाना रायगंज (प. बंगाल) को भी सूचना दी गई। इस प्रकार आरपीएफ की सतर्कता से एक गंभीर अपराध का समय रहते खुलासा किया गया।

## संपादकीय

### सोमनाथ : विनाश पर आस्था की विजय की अमर गाथा

**गजनवी के आक्रमण से लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आधुनिक विजन तक की विकास यात्रा**

गांधीनगर : भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का केंद्र सोमनाथ मंदिर का इतिहास अडिग श्रद्धा और अविरत पुनर्निर्माण की अद्वितीय गाथा है। बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम यह पवित्र धाम सदियों से भारतीय अस्मिता का रक्षक रहा है।

**ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और संघर्ष का इतिहास**

सोमनाथ मंदिर की भव्यता और समृद्धि ही प्राचीन समय में आक्रांताओं के लिए आकर्षण की वजह बन गई थी। 1025-26 ईस्वी में अफगानिस्तान के गजनी प्रांत के सुल्तान महमूद गजनवी ने सोमनाथ पर अपना सबसे विनाशक और बर्बर आक्रमण किया था। उस वक्त सोमनाथ अत्यंत समृद्ध धार्मिक केंद्र था, जिसे लूटने के लिए गजनवी ने रेगिस्तानी क्षेत्र के कठिन मार्गों को पार किया था। स्थानीय शासकों और लोगों ने उसका वीरतापूर्वक सामना किया, लेकिन गजनवी ने मंदिर को भारी नुकसान पहुंचाया और मंदिर की अकूत संपत्ति को लूट लिया। इसके बावजूद, गजनवी लोगों की आस्था को मिटाने में असफलत रहा। उसके जाने के बाद तुरंत ही चालुक्य (सोलंकी) शासकों ने मंदिर का पुनर्निर्माण कर संस्कृति को जीवित रखा।

**स्वतंत्रता और राष्ट्रीय गौरव की पुनर्स्थापना**

भारत की स्वतंत्रता के बाद सोमनाथ मंदिर का नवनिर्माण राष्ट्रीय आत्मगौरव का विषय बन गया था। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने 1947 में मंदिर का उसके मूल गौरव के साथ पुनर्निर्माण करने का संकल्प किया। उनके मार्गदर्शन में प्रसिद्ध शिल्पकार प्रभाशंकर सोमपुरा ने पारंपरिक चालुक्य शैली में भव्य मंदिर का निर्माण किया। 1951 में प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने इस मंदिर लोकार्पण करते हुए इसे भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बताया था।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का विजन और आधुनिक विकास के नए क्षितिज

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के श्री सोमनाथ ट्रस्ट का अध्यक्ष बनने के बाद सोमनाथ के विकास में एक नया और आधुनिक अध्याय शुरू हुआ है। उनकी दूरदर्शी योजना के तहत मंदिर परिसर को विश्व स्तरीय पर्यटन स्थल बनाया गया है। श्रद्धालुओं के लिए डिजिटल दर्शन, सुरक्षा और सुविधाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

- ▸▸ प्रोमेनाड (वॉक-वे) : समुद्र तट पर बना सुंदर पदयात्री मार्ग पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है।
- ▸▸ टेक्नोलॉजी : भव्य 'लाइट एंड साउंड शो' के माध्यम से इतिहास को जीवंत रखने के प्रयास हुए हैं।
- ▸▸ संरक्षण : समुद्री क्षार और जंग से मंदिर को बचाने के लिए विशेष तकनीकी उपाय किए गए हैं।

आज सोमनाथ मंदिर उन पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विकास के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर दुनिया भर के श्रद्धालुओं के लिए आस्था और राष्ट्रीय स्वाभिमान का जीवंत प्रतीक बनकर खड़ा है।

# उम्मीद के जुगनुओं का आभास देता साहस

> जनतंत्र में पत्रकारिता भय के नहीं, सत्य के प्रति उत्तरदायी होती है। सत्य को समाज के सामने रखना और सत्य के पक्ष में खड़ा होते हुए दिखना पत्रकारिता का धर्म है। तभी उसकी विश्वसनीयता बनी रह सकती है। यह विश्वसनीयता पत्रकारिता का प्राण-तत्व है।

देश के सबसे स्वच्छ माने जाने वाले शहर इंदौर में पीने के दूषित पानी के कारण चौदह लोग मारे गये और दो सौ से अधिक लोग बीमार होकर अस्पतालों में इलाज करवा रहे हैं। मरने वालों और बीमार होने वालों की यह संख्या एक आंकड़ा मात्र नहीं है, यह हमारी समूची व्यवस्था पर लगा एक सवालिया निशान है, जिसका उत्तर देना त्रासदी से जुड़े सभी व्यक्तियों, जिनमें उच्च अधिकारी और संबंधित मंत्री शामिल हैं, का दायित्व है। प्रशासन और संबंधित मंत्री महोदय ने पीड़ितों की सहायता और स्थिति को सुधारने का आश्वासन दिया है। मामला गंभीर है और अपनी तरह का पहला कांड भी नहीं है। देश के अलग-अलग हिस्सों में इस तरह की आपराधिक लापरवाही के उदाहरण अक्सर मिलते रहते हैं। इस मामले में राज्य के संबंधित मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने अपना 'अपराध' भी स्वीकार किया है और खेद भी व्यक्त किया है। अब मामले की जांच होगी, कुछ कार्रवाई भी होगी। और फिर इसे भी पहले की ऐसी वारदातों की तरह भुला दिया जायेगा, आवश्यकता भूल जाने की इस प्रवृत्ति से निपटने की है। यह याद रखा जाना चाहिए कि संबंधित व्यक्तियों-विभागों की लापरवाही के कारण इतना गंभीर कांड हो गया, जो किसी भी दृष्टि से क्षम्य नहीं है।

लेकिन इस त्रासदी के साथ जुड़े दो पक्ष और भी हैं, जिन्हें याद रखा जाना चाहिए– पहले तो यह कि इस कांड के दौरान देश ने अपने एक बड़े माने जाने वाले नेता की उथली सोच और व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत किया है और दूसरा पक्ष उस एक पत्रकार के व्यवहार वाला है, जिसने मंत्री महोदय के घटिया उदगारों का तत्काल विरोध किया। जहां अपशब्दों का इस्तेमाल करने वाले मध्यप्रदेश के मंत्री, क्षमा मांगने के बावजूद लोक-मर्यादा के कटघरे में खड़े हैं, वहीं उस पत्रकार की सब प्रशंसा कर रहे हैं, जिसने पूरी गंभीरता और साहस के साथ मंत्री महोदय को यह जता दिया कि उनका

व्यवहार अशोभनीय ही नहीं, शर्मनाक भी था। यह बात क्षमा मांग कर रफा-दफा करने की नहीं है, अपना आपा खोने वाले ऐसे मंत्री को इतने ज़िम्मेदार पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है।

लेकिन प्रशंसा उस पत्रकार की होनी चाहिए, जिसने इस कांड में पूरे साहस और निर्भीकता के साथ मंत्री महोदय को उनकी औकात दिखाई। घटना के वीडियो वायरल हो जाने वाले इस समय में कोई यह कहकर बच नहीं सकता कि उसने ऐसा नहीं कहा था अथवा उसे ग़लत उद्धृत किया जा रहा है। सब कुछ सबके सामने आ जाता है। इंदौर के इस कांड में स्पष्ट दिख रहा है कि मंत्री जी ने पत्रकार के वाजिब और ज़रूरी सवाल को सिर्फ 'फोकट' का प्रश्न ही नहीं बताया बल्कि ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया जो सभ्य समाज में अभद्र माना जाता है। लेकिन इस मामले में प्रशंसनीय बात पत्रकार अनुराग द्वारी का साहस है जो उन्होंने मंत्री महोदय के सामने प्रकट किया। प्रशंसनीय इसलिए कि हमारे आज के दौर में किसी पत्रकार का इस तरह का साहस दिखाना अपने आप में एक समाचार है। कारण कुछ भी रहे हों, लेकिन हकीकत यही है कि हमारी आज की पत्रकारिता पर सत्ता के समक्ष झुकने के आरोप आये दिन लग रहे हैं और इसके उदाहरण भी अक्सर मिलते रहते हैं। यही नहीं, मीडिया के एक बहुत बड़े हिस्से की तो पहचान ही 'गोदी मीडिया' वाली हो गयी है–गोदी मीडिया यानी सत्ता के समक्ष नतमस्तक पत्रकारिता। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में तो यह प्रवृत्ति अखबारों से कहीं ज्यादा ही दिख रही है। अपवाद अवश्य हैं, पर इनसे तो नियम ही सिद्ध होते हैं। ऐसे में अनुराग द्वारी जैसे पत्रकार का इस तरह साहस दिखाना सुखद आश्चर्य ही देता है।

यह अपने आप में एक विडंबना ही है कि जो साहस और स्पष्टवादिता पत्रकारिता का आवश्यक गुण माना जाता था, वह आज की पत्रकारिता में खोजे नहीं मिलता। एनडीटीवी के वरिष्ठ पत्रकार अनुराग द्वारी ने इस गुण का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। स्थिति की विकटता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि कभी साहसी और निष्पक्ष पत्रकारिता का प्रतीक माना जाना वाला समाचार चैनल अपने ही इस साहसी पत्रकारिता के उदाहरण को उचित महत्व नहीं दे पाया। 'उचित महत्व न दे पाया' कहना इसलिए ज़रूरी है कि यह मानना सही नहीं होगा कि चैनल एनडीटीवी वाले इस 'साहस' को जानते या समझते नहीं हैं। यह दुर्भाग्य ही है कि हमारे अधिकांश समाचार चैनल व्यावसायिक और सत्ताधारी दबावों में काम करते दिख रहे हैं। हमारी पत्रकारिता की शोचनीय स्थिति है यह। अनायास ही आपातकाल के वे दिन याद आ रहे हैं जब 'झुकने के लिए कहे जाने वाली पत्रकारिता रेंगने लगी थी' आपातकाल के दौरान अधिकांश मीडिया संस्थानों ने सत्ता के समक्ष जैसे आत्मसमर्पण कर दिया था, वह हमारे लोकतंत्र और हमारी पत्रकारिता दोनों के इतिहास के काले पन्नों वाला काल था। यह एक दुर्भाग्य ही है कि आज के इस 'गोदी मीडिया' वाले काल की पत्रकारिता कुछ इसी तरह के संकेत दे रही है।

ऐसे में किसी अनुराग द्वारी का दिखाया गया साहस उम्मीद के जुगनुओं का आभास देता है। जुगनू सूरज नहीं हो सकता, पर इस बात की उम्मीद तो जगाता है कि हर अंधेरे को चुनौती दी जा सकती है। चुनौती दी जानी चाहिए। अनुराग द्वारी ने मध्य प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री को बड़े साहस और स्पष्टता के साथ समझा दिया था कि कुछ भी कहने और करने के सत्ता के भ्रम को तोड़ा जा सकता है। सत्ता चाहे राजनीतिक हो या फिर आर्थिक, सच्ची पत्रकारिता उसके सामने झुकेगी तो अपने दायित्व से च्युत ही होगी। जनतंत्र में पत्रकारिता भय के नहीं, सत्य के प्रति उत्तरदायी होती है। सत्य को समाज के सामने रखना और सत्य के पक्ष में खड़ा होते हुए दिखना पत्रकारिता का धर्म है। तभी उसकी विश्वसनीयता बनी रह सकती है। यह विश्वसनीयता पत्रकारिता का प्राण-तत्व है। इस विश्वसनीयता को बनाये रखना, और इसके लिए संघर्ष करना पत्रकारिता का दायित्व भी है और सच्ची और अच्छी पत्रकारिता की पहचान भी। लेकिन यह तभी संभव है जब पत्रकारिता भय और दबाव से मुक्त हो। अनुराग द्वारी ने सत्ता के मद में चूर एक राजनेता को उसकी हैसियत बतायी है। इसके लिए प्रशंसा के पात्र हैं वे। इस बात की आशंका बनी रहेगी कि सत्ता इस तरह की पत्रकारिता को कुचलने की कोशिश कर सकती है। बहुत ताकत होती है सत्ता में। पर ऐसी किसी ताकत के समक्ष न झुकना ही सच्ची पत्रकारिता को पहचान देता है।

## प्रेरणा

# कला की साधना में समर्पण की अमर मिसाल

कला केवल रंगों, रेखाओं और आकृतियों का संयोजन नहीं होती, बल्कि वह साधना होती है, तपस्या होती है और कभी-कभी त्याग की चरम परीक्षा भी। इतिहास में ऐसे अनेक कलाकार हुए हैं जिन्होंने अपनी कला के लिए सुविधाओं, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत सुखों तक का बलिदान दिया। सर जोशुआ रेनॉल्ड्स उन्हीं महान कलाकारों में से एक थे, जिनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्ची कला समझौते से नहीं, समर्पण से जन्म लेती है। अठारहवीं सदी के इस महान चित्रकार का नाम आज भी कला-जगत में आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है, क्योंकि उन्होंने कला को केवल पेशा नहीं, जीवन का उद्देश्य माना।

जोशुआ रेनॉल्ड्स का मानना था कि महानता बिना अध्ययन और गहन चिंतन के संभव नहीं है। इसी विचार से प्रेरित होकर वे अपनी कला को निखारने के लिए इटली गए, जिसे उस समय कला की राजधानी माना जाता था। इटली की धरती पर कदम रखते ही उन्होंने स्वयं को वहां की महान कलात्मक विरासत के अध्ययन में झोंक दिया। विशेष रूप से वेटिकन में राफेल और माइकल एंजेलो जैसी विभूतियों की कृतियों ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। वे घंटों उन चित्रों और भित्तिचित्रों के सामने खड़े रहते, मानो समय ठहर गया हो। उनके लिए वह केवल देखने का अनुभव नहीं था, बल्कि सीखने, समझने और आत्मसात करने की प्रक्रिया थी।

वेटिकन की ठंडी दीवारों के बीच बैठकर वे रेखाओं की सूक्ष्मता, रंगों की गहराई और भावों की अभिव्यक्ति को समझने में इतने डूब जाते कि उन्हें अपने आसपास का कोई होश नहीं रहता। उस समय मौसम बेहद खराब था। कड़ाके की ठंड, बर्फीली हवाएं और असहज परिस्थितियां किसी भी सामान्य व्यक्ति को वहां से हटने पर मजबूर कर देतीं, लेकिन रेनॉल्ड्स के लिए कला सर्वोपरि थी। उन्होंने अपने शरीर की परवाह नहीं की, न ही अपने स्वास्थ्य की। परिणामस्वरूप उन्हें गंभीर सर्दी लग गई, जिसने आगे चलकर उनकी श्रवण शक्ति को प्रभावित किया। धीरे-धीरे उनकी सुनने की क्षमता कम होने लगी, लेकिन इस शारीरिक क्षति ने उनके मन में कभी पछतावे का भाव नहीं पैदा किया।

जब किसी ने उनसे सहानुभूति जताते हुए कहा कि यदि वे इटली नहीं जाते, तो उनकी सुनने की क्षमता सुरक्षित रहती, तब रेनॉल्ड्स का उत्तर उनकी महानता को परिभाषित कर देता है। उन्होंने गर्व और संतोष के साथ कहा कि यदि कला को निखारने के लिए उन्हें सौ बार भी अपनी सुनने की क्षमता गंवानी पड़े, तो वे उसे भी स्वीकार करेंगे। उनके शब्दों में न तो पीड़ा थी और न ही शिकायत, बल्कि एक कलाकार का अटूट विश्वास और समर्पण झलकता था। उन्होंने स्पष्ट कहा कि कला के साथ समझौता करना उन्हें स्वीकार नहीं है, क्योंकि इटली जाकर ही वे चित्रों में छिपे गूढ़ अर्थों को समझ सके।

यह कथन केवल एक कलाकार की भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि उस दर्शन की अभिव्यक्ति था, जिसमें कला सर्वोच्च मूल्य बन जाती है। रेनॉल्ड्स जानते थे कि महानता सहज नहीं मिलती। इसके लिए कठिन परिश्रम, निरंतर अध्ययन और कभी-कभी व्यक्तिगत क्षति भी सहनी पड़ती है। उन्होंने यह भी समझा कि सच्चा कलाकार वही है जो तात्कालिक सुविधा या लाभ के लिए अपने मापदंडों को कम न करे। इसी सिद्धांत के कारण उनकी कला में गहराई, गरिमा और कालजयी सौंदर्य दिखाई देता है।

रेनॉल्ड्स का जीवन यह भी सिखाता है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती और न ही कोई सीमा। वे पहले से ही एक सफल चित्रकार थे, फिर भी उन्होंने स्वयं को अधूरा मानते हुए इटली की यात्रा की। यह विनम्रता और जिज्ञासा ही उन्हें महान बनाती है। उन्होंने राफेल की रचनात्मक संतुलन क्षमता और माइकल एंजेलो की शक्तिशाली अभिव्यक्ति से जो सीखा, वही आगे चलकर उनकी अपनी शैली में दिखाई दिया। उनके चित्रों में शास्त्रीय अनुशासन के साथ भावनात्मक गहराई का अद्भुत मेल देखने को मिलता है।

आज के समय में, जब त्वरित सफलता और सुविधाजनक रास्तों की तलाश आम हो गई है, रेनॉल्ड्स का जीवन एक आईने की तरह सामने आता है। वह हमें बताता है कि सृजन का मार्ग आसान नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता चाहता है, तो उसे असुविधाओं का सामना करना ही पड़ता है। कला हो या कोई अन्य क्षेत्र, बिना गहन समर्पण के स्थायी पहचान बनाना कठिन है।

रेनॉल्ड्स की यह कहानी केवल कलाकारों के लिए ही नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणास्रोत है जो अपने जीवन में किसी उद्देश्य को लेकर गंभीर है। उन्होंने यह साबित किया कि जब लक्ष्य स्पष्ट हो और समर्पण सच्चा हो, तो शारीरिक सीमाएं भी इच्छाशक्ति के आगे छोटी पड़ जाती हैं। उनकी सुनने की क्षमता भले ही कम हो गई, लेकिन उनकी कला की आवाज आज भी सदियों बाद गूंज रही है।

कला के प्रति ऐसा अटूट समर्पण ही किसी साधक को सामान्य से असाधारण बनाता है। सर जोशुआ रेनॉल्ड्स ने अपने जीवन से यह सिखाया कि महानता का मूल्य चुकाना पड़ता है, लेकिन जब वह मूल्य कला, ज्ञान या सत्य के लिए दिया जाए, तो वह बलिदान नहीं, बल्कि गौरव बन जाता है। यही कारण है कि वे केवल अपने समय के नहीं, बल्कि हर युग के महान कलाकारों में गिने जाते हैं।

# Apache Helicopter Deal को लेकर Donald Trump के 'झूठे' दावों पर कब चुप्पी तोड़ेगा भारत?

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर ऐसा दावा किया है जो तथ्यों से कोसों दूर है। हम आपको बता दें कि एक राजनीतिक कार्यक्रम में ट्रंप ने कहा कि भारत ने अमेरिका से 68 अपाचे हमला हेलीकॉप्टर खरीदे हैं और इनकी डिलीवरी में देरी को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद उनसे मिलने आए थे और बोले थे कि "सर क्या मैं आपसे मिल सकता हूं"। ट्रंप यहीं नहीं रुके। उन्होंने यह भी जोड़ा कि रूस से तेल खरीदने के कारण भारत पर टैरिफ लगाए गए और इससे मोदी खुश नहीं थे। लेकिन सच्चाई यह है कि भारत ने कुल 28 अपाचे हेलीकॉप्टर खरीदे हैं। इनमें 22 हेलीकॉप्टर वायुसेना के लिए पहले चरण में लिए गए थे और 6 हेलीकॉप्टर बाद में सेना के लिए खरीदे गये। न तो 68 हेलीकॉप्टर खरीदे गए और न ही ऐसा कोई रिकॉर्ड है कि प्रधानमंत्री मोदी किसी डिलीवरी देरी को लेकर ट्रंप के पास गए हों। डिलीवरी में जो सीमित देरी हुई वह तकनीकी और आपूर्ति कारणों से थी और उसे दोनों देशों के रक्षा तंत्र ने आपसी समन्वय से सुलझाया। ट्रंप का यह बयान न केवल गलत है बल्कि जानबूझकर बढ़ा चढ़ाकर पेश किया गया प्रतीत होता है। दिलचस्प बात यह है कि इस बयान पर नई दिल्ली ने कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी है। सरकार की ओर से न तो खंडन आया और न ही स्पष्टीकरण। कूटनीतिक हलकों में इसे लेकर असहजता जरूर महसूस की गई लेकिन सार्वजनिक तौर पर चुप्पी बनाए रखी गई। देखा जाये तो यह कोई पहली बार नहीं है जब ट्रंप ने प्रधानमंत्री मोदी को लेकर झूठे या अतिरंजित दावे किए हों। साथ ही यह समझना जरूरी है कि अपाचे हेलीकॉप्टर कोई साधारण रक्षा सौदा नहीं हैं। यह भारत की सामरिक क्षमता का एक अहम हिस्सा हैं। अपाचे हेलीकॉप्टर आधुनिक युद्ध में जमीन पर सेना को सीधी और घातक हवाई सहायता देने के लिए जाने जाते हैं। पहाड़ी इलाकों में, सीमावर्ती क्षेत्रों में और तेज रफ्तार सैन्य अभियानों में इनकी भूमिका निर्णायक होती है। चीन और पाकिस्तान जैसी चुनौतियों के बीच भारत के लिए यह प्लेटफॉर्म सामरिक संतुलन बनाए रखने का एक मजबूत औजार है। ऐसे में इन हेलीकॉप्टरों की संख्या को गलत तरीके से पेश करना केवल आंकड़ों की गलती नहीं है। यह भारत की सैन्य तैयारी और रणनीतिक सोच को गलत रोशनी में दिखाने का प्रयास है। जब कोई अमेरिकी नेता यह कहता है कि भारत ने 68 हेलीकॉप्टर खरीदे, तो यह संदेश जाता है कि भारत पूरी तरह अमेरिकी हथियारों पर निर्भर है और अमेरिका के दबाव में फैसले करता है। यह धारणा भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के बिल्कुल खिलाफ है।

देखा जाये तो ट्रंप की राजनीति का यह तरीका पुराना है। वह हर अंतरराष्ट्रीय सौदे को अपने व्यक्तिगत पराक्रम की तरह पेश करते हैं। उनके लिए भारत कोई साझेदार नहीं बल्कि एक मंच है, जिस पर खड़े होकर वह अपने घरेलू समर्थकों को यह दिखा सकें कि उन्होंने अमेरिका के लिए कितने अरब डॉलर के सौदे कराए। अब सवाल उठता है कि नई दिल्ली चुप क्यों है। क्या यह कूटनीतिक समझदारी है या राजनीतिक मजबूरी? हालांकि कूटनीतिज्ञों का कहना है कि हर बयान पर प्रतिक्रिया देना जरूरी नहीं और ट्रंप जैसे नेता को नजरअंदाज करना ही बेहतर है। देखा जाये तो भारत और अमेरिका के रिश्ते सिर्फ किसी एक नेता पर निर्भर नहीं हैं। रक्षा सहयोग, तकनीकी साझेदारी, हिंद प्रशांत रणनीति और वैश्विक शक्ति संतुलन जैसे मुद्दे इन रिश्तों की बुनियाद हैं। लेकिन रिश्तों की मजबूती का मतलब यह नहीं कि झूठ को बिना चुनौती के स्वीकार कर लिया जाए। खासकर तब, जब वह झूठ भारत की गरिमा और संप्रभु निर्णय क्षमता पर सवाल खड़ा करता हो। मोदी सरकार ने अब तक खुद को मजबूत और आत्मविश्वासी नेतृत्व के रूप में पेश किया है। ऐसे में यह उम्मीद की जाती है कि जब अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत को गलत तरीके से पेश किया जाए, तो एक स्पष्ट और तथ्यात्मक जवाब आए। यह जवाब आक्रामक होना जरूरी नहीं, लेकिन सटीक जरूर होना चाहिए। ट्रंप का बयान एक चेतावनी भी है। यह दिखाता है कि वैश्विक राजनीति में सच से ज्यादा कहानी बिकती है। अगर भारत अपनी कहानी खुद नहीं बताएगा, तो दूसरे लोग उसे अपने हिसाब से गढ़ते रहेंगे। बहरहाल, चुप्पी कभी कभी रणनीति हो सकती है, लेकिन बार बार की चुप्पी अंततः सवाल बन जाती है।

## अभियान

# महाभारत के युद्ध से पहले देवी शक्ति का आवाहन: मां बगुलामुखी और विजय का रहस्यमय सूत्र

भारतीय सनातन परंपरा में यह स्पष्ट माना गया है कि जब संघर्ष केवल बाहरी नहीं रह जाता, जब युद्ध केवल अस्त्र-शस्त्रों तक सीमित न होकर मन, बुद्धि और चेतना के स्तर पर लड़ा जाता है, तब देवशक्ति की भूमिका निर्णायक हो जाती है। महाभारत केवल दो वंशों के बीच हुआ युद्ध नहीं था, बल्कि यह धर्म और अधर्म, संयम और अहंकार, विवेक और कपट के बीच का महासंग्राम था। इस महासंग्राम में पांडवों की विजय के पीछे केवल अर्जुन का गांडीव, भीम की गदा या कृष्ण की नीति ही नहीं थी, बल्कि एक गहरी, रहस्यमयी और शक्तिशाली देवी साधना भी थी, जिसका उल्लेख सामान्य रूप से कम किया जाता है। यह साधना थी मां बगुलामुखी की उपासना।

मां बगुलामुखी दस महाविद्याओं में आठवीं महाविद्या के रूप में पूजी जाती हैं। वे शक्ति के उस स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो सीधे शत्रु की बुद्धि, वाणी और निर्णय शक्ति पर प्रहार करती हैं। जहां अन्य देवियां संरक्षण, सृजन या संहार का कार्य करती हैं, वहीं मां बगुलामुखी की शक्ति "स्तंभन" की है, अर्थात् शत्रु को जड़ कर देना, उसकी सोच को रोक देना, उसके षड्यंत्रों को निष्फल कर देना। यही कारण है कि उन्हें विजय की देवी कहा जाता है। कलियुग में भी उनकी साधना को विशेष रूप से प्रभावशाली माना गया है, खासकर तब, जब व्यक्ति अन्याय, विरोध, कानूनी विवाद, शत्रु बाधा या मानसिक अशांति से घिरा हो।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जब महाभारत युद्ध की घोषणा हो चुकी थी और दोनों पक्ष युद्धभूमि में उतरने की तैयारी कर रहे थे, तब भगवान श्रीकृष्ण ने यह भली-भांति समझ लिया था कि यह युद्ध केवल बाहुबल से नहीं जीता जा सकता। कौरव पक्ष के पास विशाल सेना थी, भीष्म जैसे अजेय योद्धा थे, द्रोण जैसा महान गुरु था और कर्ण जैसा दानवीर व पराक्रमी योद्धा भी था। इसके अतिरिक्त शकुनि जैसी कुटिल बुद्धि भी कौरवों के पक्ष में कार्य कर रही थी। ऐसे में केवल शौर्य और संख्या बल पर्याप्त नहीं था। श्रीकृष्ण जानते थे कि विजय के लिए शत्रु की बुद्धि को भ्रमित करना, उसके निर्णयों को गलत दिशा में मोड़ना और उसके आत्मविश्वास को भीतर से कमजोर करना आवश्यक है। यहीं से देवी साधना का मार्ग प्रशस्त होता है। कहा जाता है कि युद्ध से पहले श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में पांडवों ने मां बगुलामुखी की विशेष साधना की। यह साधना किसी प्रत्यक्ष युद्ध विजय के लिए नहीं, बल्कि शत्रु पक्ष की मानसिक और बौद्धिक शक्ति को निष्क्रिय करने के लिए की गई थी। महाभारत के घटनाक्रम पर ध्यान दें तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि कौरव पक्ष बार-बार ऐसे निर्णय लेता है, जो अंततः उसी के विनाश का कारण बनते हैं। दुर्योधन का अहंकार, शकुनि की चालों में उलझ जाना, कर्ण का समय पर विवेक न करना, भीष्म का प्रतिज्ञाओं में बंध जाना और द्रोण का भावनात्मक रूप से विचलित हो जाना—ये सभी घटनाएं इस बात की ओर संकेत करती हैं कि कहीं न कहीं उनकी निर्णय शक्ति बाधित हो चुकी थी। मां बगुलामुखी की उपासना का मूल तत्व है वाणी और बुद्धि पर नियंत्रण। यही कारण है कि उन्हें वाक्-सिद्धि की देवी भी कहा जाता है। वे साधक को यह शक्ति देती हैं कि उसकी वाणी प्रभावशाली बने और शत्रु की वाणी निष्प्रभावी हो जाए। यही शक्ति महाभारत में श्रीकृष्ण के संवादों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। चाहे वह गीता का उपदेश हो या युद्ध के दौरान रणनीतिक संवाद, श्रीकृष्ण की वाणी हर स्थिति में निर्णायक सिद्ध होती है। इसके विपरीत, कौरव पक्ष की वाणी अधिकतर क्रोध, अहंकार और असंयम से भरी हुई दिखाई देती है। मां बगुलामुखी की पूजा में पीले रंग का विशेष महत्व बताया गया है। पीला रंग ज्ञान, स्थिरता और गुरु तत्व का प्रतीक माना जाता है। साधक को स्नान-ध्यान के बाद पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर बैठकर पूजा करने की परंपरा इसी कारण से है। यह केवल बाहरी नियम नहीं, बल्कि साधक के मन को एक विशेष चेतन अवस्था में लाने की प्रक्रिया है। पूजा के दौरान हल्दी का प्रयोग, पीले पुष्प और पीले फल अर्पित करना, यह दर्शाता है कि साधक अपने भीतर की नकारात्मकता, क्रोध और भय को त्यागकर देवी शक्ति के समक्ष समर्पण कर रहा है। धार्मिक मान्यता है कि मां बगुलामुखी की पूजा करने वाले व्यक्ति का आहार, विचार और व्यवहार सात्विक होना चाहिए। यह साधना केवल मंत्र जाप तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन शैली का भी अनुशासन मांगती है। श्रद्धा और पवित्र मन के साथ की गई साधना से साधक के जीवन में स्थिरता आती है और उसकी मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण होती हैं। मां बगुलामुखी का मंत्र अत्यंत शक्तिशाली माना गया है—

'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।'

यह मंत्र शत्रु की वाणी, मुख और बुद्धि को स्तंभित करने का आवाहन करता है। साधकों का विश्वास है कि इस मंत्र के नियमित जाप से शत्रु बाधाएं स्वतः कमजोर होने लगती हैं और साधक के पक्ष में परिस्थितियां बनने लगती हैं।

महाभारत के युद्ध को यदि आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि पांडवों की विजय केवल रणभूमि की नहीं थी, बल्कि यह मानसिक और नैतिक स्तर पर भी विजय थी। पांडवों के भीतर धैर्य, संयम और धर्म का भाव बना रहा, जबकि कौरव पक्ष भीतर से टूटता चला गया। यह स्थिति मां बगुलामुखी की स्तंभन शक्ति का ही एक रूप मानी जाती है, जिसमें शत्रु स्वयं अपनी गलतियों का शिकार बन जाता है।

आज के समय में मां बगुलामुखी की उपासना केवल पौराणिक कथा बनकर नहीं रह गई है। आधुनिक जीवन में भी लोग कानूनी विवादों, राजनीतिक संघर्षों, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव से जूझ रहे हैं। ऐसे में मां बगुलामुखी की साधना को साहस, आत्मविश्वास और मानसिक शांति प्राप्त करने का माध्यम माना जाता है। यह साधना व्यक्ति को यह शक्ति देती है कि वह विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर रहे और अपने लक्ष्य से विचलित न हो।

अंततः मां बगुलामुखी का संदेश यही है कि सच्ची विजय बाहरी नहीं, बल्कि भीतरी होती है। जब व्यक्ति अपनी वाणी, बुद्धि और मन को नियंत्रित कर लेता है, तब कोई भी शत्रु, कोई भी बाधा उसे पराजित नहीं कर सकती। महाभारत के युद्ध से जुड़ा यह रहस्य हमें यह सिखाता है कि धर्म, विवेक और देवी शक्ति के सहारे लड़ा गया संघर्ष अंततः विजय ही दिलाता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

# सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : वीर हमीरजी गोहिल के शौर्य एवं राष्ट्रीय अस्मिता के पुनरुत्थान का उत्सव

## अनंत ज्योति सोमनाथ : स्वाभिमान पर्व में गूंजेगा 1000 वर्ष के संघर्ष तथा आस्था का इतिहास

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : भारतीय संस्कृति के राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा अजेय आस्था के प्रतीक समान सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में जब सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है, तब एक ऐसे वीर योद्धा का स्मरण अनिवार्य हो जाता है, जिन्होंने सोमनाथ की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। वह नाम यानी वीर हमीरजी गोहिल। सोमनाथ का इतिहास केवल आक्रमणों का ही नहीं, अपितु आक्रमणों के विरुद्ध संघर्ष कर शौर्य दिखाने वाले वीरों का भी है। जब आततायी जफरखान की सेना ने सोमनाथ पर आक्रमण किया, तब लाठी के राजकुँवर हमीरजी गोहिल ने सोमनाथ के शिवलिंग की रक्षा करने का संकल्प किया था। नवविवाहित पत्नी का संग और राजसिंहासन का मोह त्यागकर वे सोमनाथ की रक्षा के लिए निकल पड़े थे। मार्ग में वेगडाजी भील जैसे सेनानी उनके साथ जुड़े। इस छोटी-सी सेना ने विशाल आक्रमणकारी सेना के विरुद्ध जो प्रतिकार किया, वह आज भी इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित है। सोमनाथ मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार के निकट आज भी वीर हमीरजी गोहिल का स्मारक स्तंभ तथा उनकी भव्य प्रतिमा अडिग खड़ी है।

### वीर हमीरजी गोहिल की प्रतिमा

हाथ में तलवार तथा चेहरे पर स्वाभिमान से युक्त उनकी प्रतिमा आने वाली पीढ़ी को सिखाती है कि राष्ट्र एवं धर्म के गौरव के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की परंपरा इस धरती की तासीर है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मनाया जा रहा सोमनाथ स्वाभिमान पर्व केवल अतीत को याद करने का उत्सव नहीं, अपितु हमीरजी जैसे शहीदों के बलिदान से सिंचित इस धरती की अजेयता का जश्न है। आगामी 11 जनवरी को निकलने वाली भव्य शौर्य यात्रा, जो हमीरजी गोहिल की प्रतिमा से सभा स्थल तक जाएगी, सच्चे अर्थ में शहीदों की विरासत को दी जाने वाली श्रद्धांजलि है। 108 घुड़सवारों तथा जय सोमनाथ के जयघोष के साथ निकलने वाली यह यात्रा दर्शाएगी कि हमीरजी का शौर्य आज भी भारत की युवा पीढ़ी में जीवंत है।

### वीर हमीरजी गोहिल का स्मारक स्तंभ

यह वह पवित्र स्थल है, जहाँ लड़ते-लड़ते हमीरजी ने वीरगति प्राप्त की थी। प्रत्येक श्रद्धालु सोमनाथ दादा के दर्शन को जाने से पहले इस शहीद को नमन करता है।

क. मा. मुनशी ने अपनी पुस्तक 'सोमनाथ : द श्राइन इटर्नल' में जिस अस्मिता का उल्लेख किया है, उस अस्मिता का जीवंत लहू यानी वीर हमीरजी गोहिल। सोमनाथ मंदिर राख से पुनः उठ खड़ा हुआ, कारण कि हमीरजी जैसे वीरों ने उसे अपने रक्त से सींचा था। आज जब सोमनाथ स्वर्णिम युग में प्रवेश कर रहा है, तब वीर हमीरजी का स्मारक स्तंभ हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता तथा आस्था मुफ्त नहीं मिलती हैं। इनके लिए शौर्य तथा बलिदान की आवश्यकता पड़ती है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : भारत के अखंड स्वाभिमान की अभिव्यक्ति

## उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने सूरत रेलवे स्टेशन से सूरत जिले के लगभग 1300 श्रद्धालुओं की सूरत-वेरावळ स्पेश ट्रेन को प्रस्थान कराया

### सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत श्रद्धालु करेंगे सोमनाथ दादा के दिव्य दर्शन

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : भारत की प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा तथा राष्ट्रीय गौरव के जीवंत केन्द्र सोमनाथ मंदिर में आयोजित सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का भव्य प्रारंभ हुआ है, तब हजारों श्रद्धालु देशभर से दादा के दर्शनार्थ जा रहे हैं। गुरुवार को सूरत रेलवे स्टेशन से सूरत से वेरावळ की स्पेशल ट्रेन को उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने फ्लैगऑफ देकर प्रस्थान कराया। भारत माता की जय, हर-हर महादेव, ओम नमः शिवाय के जयकारे के साथ सूरत जिले के लगभग 1300 बड़े-बुजुर्ग, युवा सहित श्रद्धालुओं से भरी ट्रेन को रवाना किया गया।

श्री संघवी ने इस अवसर पर कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व भारत के स्वाभिमान, ऐतिहासिक धरोहर तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान का सशक्त अभिव्यक्ति समान कार्यक्रम है, जिसमें भाग लेने के लिए देशभर से लाखों श्रद्धालु सोमनाथ पधार रहे हैं। 72 घण्टे के सामूहिक ओमकार नाद के साथ शिव मंदिर गूज रहे हैं। ऋषिकुमारों के शंखनाद तथा संतों के सान्निध्य में ओम नमः शिवाय का जाप सोमनाथ मंदिर में हो रहा है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर महापौर श्री दक्षेशभाई मावाणी, जिला कलेक्टर डॉ. सौरभ पारधी, पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत, अग्रणी श्री झंखनाबेन पटेल, श्री वी. डी. झालावाडिया, श्री अनिल कुमार शुक्ला तथा अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि सोमनाथ पर गजनवी के आक्रमण के 1000 वर्ष तथा मंदिर जीर्णोद्धार के 75 वर्ष का शुभ समन्वय हुआ है, तब सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत 8 से 10 जनवरी के दौरान तीन दिवसीय महोत्सव में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित शौर्य यात्रा का भी आयोजन किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 10 व 11 जनवरी के दौरान सोमनाथ मंदिर में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में सहभागी होंगे।

## डीआरएम कप 2026 क्रिकेट स्पर्धा की शुरुआत

**(जीएनएस)।** वडोदरा के प्रतापनगर स्थित माधव राव सिंधिया स्टेडियम में आज से डीआरएम कप 2026 शुरु हुआ। इस कप का उद्घाटन वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके द्वारा किया गया। श्री भडके ने इस कप में भाग ले रही टीमों के खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया और उन्हें शिद्दत के साथ खेल भावना से अपने सभी मैच खेलने और उन्हें जीतने का आवाहन किया।

इस क्रिकेट कप में वडोदरा मंडल के विभिन्न विभागों एवं आफिसर्स टीम सहित कुल 16 टीमें क्रिकेट स्प्रिट के साथ भाग ले रही हैं। कप का फाइनल मैच माधव राव सिंधिया स्टेडियम में 20 जनवरी,2025 को खेला जायेगा।

## सोमनाथ में जूनागढ के योग बोर्ड आदि संस्थानों की महिलाओं द्वारा अखंड शिवधुन का प्रारंभ

### पर्व के प्रथम दिन 500 बहनों ने भजन, कीर्तिन तथा शिवधुन का लाभ लिया

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व सोमनाथ में शिवभक्ति का अनूठा पर्व बना है। अटूट आस्था के 1000 वर्ष अंतर्गत सोमनाथ में तीन दिवसीय कार्यक्रमों में श्रद्धालु श्रद्धापूर्वक सहभागी हो रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में आयोजित होने वाले स्वाभिमान पर्व अंतर्गत शौर्य सभा-शौर्य यात्रा तथा ओमकार मंत्र आदि कार्यक्रमों को लेकर सोमनाथ परिसर में गुरुवार को अखंड ओमकार जाप तथा अखंड शिव भजन के कार्यक्रम प्रारंभ हुए। इन कार्यक्रमों में जूनागढ से योग बोर्ड की महिला सदस्यों तथा विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों की महिला प्रतिनिधियों, योग-व्यायाम शिक्षकों तथा महिला कार्यकर्ताओं सहित 500 बहनों ने

अखंड शिवधुन में भाग लिया। जब करताल, लोक कंठ के शिवभक्ति गीत भावमय रूप से गाए जा रहे थे, तब सोमनाथ मंदिर में आ रहे दर्शनार्थियों ने भी अखंड शिवधुन सुनकर श्रद्धा की भावना व्यक्त की। जूनागढ से विशेष बस सोमनाथ आई है। तीन दिनों तक विभिन्न क्षेत्रों से शिवभक्त शिवधुन में सहभागी होने वाले हैं। गुरुवार को पहले दिन शिवधुन कार्यक्रम का समन्वय जूनागढ की युवा विकास अधिकारी श्री नीताबेन वाळा ने किया। योग बोर्ड की जोन को-ऑर्डिनेटर श्री चेतनाबेन गजेरा ने श्रद्धा के साथ कहा कि सोमनाथ में स्वाभिमान पर्व आध्यात्मिक भाव का पर्व बना है और इसमें सहभागी होने का आनंद है। उनके साथ को-ऑर्डिनेटर श्री सोनलबेन भी सहभागी हुईं।

## रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव 9 जनवरी को 100 रेलवे अधिकारियों को 70वां अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2025 और सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले रेल मंडलों को 26 शील्ड प्रदान करेंगे

**(जीएनएस)।** भारतीय रेल, संगठन में अपनी बेहतरीन सेवा और उत्कृष्ट योगदान के लिए 100 कर्मठ कर्मचारियों और अधिकारियों को प्रतिष्ठित 70वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2025 से सम्मानित करने जा रहा है। पुरस्कार समारोह का आयोजन 9 जनवरी, 2026 को इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपो सेंटर (यशोभूमि), द्वारका, नई दिल्ली में किया जाएगा।

रेलवे, सूचना और प्रसारण, तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव, चयनित रेलवे कर्मचारियों को 70वां अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार प्रदान करेंगे। इस समारोह में रेल और जल शक्ति राज्य मंत्री, श्री वी. सोमन्ना, रेल और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री, श्री रवनीत सिंह, रेलवे बोर्ड के चेयरमैन और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री सतीश कुमार, साथ ही रेलवे बोर्ड के सदस्य और विभिन्न रेल मंडलों और प्रोडक्शन यूनिट के माह प्रबंधक शामिल होंगे। अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार-2025 के लिए नवाचार, संचालन दक्षता, सुरक्षा, संरक्षा, राजस्व वृद्धि, परियोजना को समय पर पूरा करने, खेल में बेहतरीन प्रदर्शन और सेवा के अन्य खास क्षेत्रों में योगदान करने वाले 100 लोगों का चयन किया गया है।

**नवाचार और दक्षता को बढ़ावा देना**

17 अधिकारियों और कर्मचारियों को नवाचार, प्रक्रिया शुरू करने के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिससे उत्पादकता में सुधार होगा, खर्च में कमी आएगी, आयात कम होगा और संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल होगा। परिणामस्वरूप भारतीय रेलवे में दक्षता में वृद्धि होगी।

**बहादुरी और निस्वार्थ सेवा का सम्मान**

22 रेल कर्मचारियों और अधिकारियों को व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना किए गए निःस्वार्थ और सराहनीय सेवा व सुरक्षा कार्यों के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप जीवन और रेलवे संपत्ति की रक्षा हुई, और सार्वजनिक सेवा के प्रति असाधारण साहस, प्रतिबद्धता और समर्पण का उदाहरण पेश किया गया।

**राजस्व वृद्धि और सतर्कता**

14 अधिकारियों और कर्मचारियों को रेलवे की आय में वृद्धि करने और बिना टिकट यात्रा, चोरी और अन्य कदाचारों से प्रभावी ढंग से निपटने में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिससे वित्तीय अनुशासन मजबूत होगा और राजस्व की सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

**परिचालन उत्कृष्टता और संपत्ति संरक्षण**

19 कर्मचारियों और अधिकारियों को परिचालन में सुधार, सुरक्षा और संरक्षा बढ़ाने, बेहतर रखरखाव प्रथाओं को सुनिश्चित करने और रेलवे संपत्तियों के सर्वोत्तम उपयोग और संरक्षण को बढ़ावा देने में उनके अनुकरणीय कार्य के लिए सम्मानित किया जाएगा।

**बड़ी परियोजना का समय पर पूरा होना**

16 अधिकारियों और कर्मचारियों को रिकॉर्ड समय में महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं को पूरा करने के लिए सम्मानित किया जाएगा, जिससे बुनियादी ढांचे को विस्तार देने, क्षमता बढ़ाने और बेहतर संचालन प्रदर्शन में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।

**अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन**

10 अधिकारियों और कर्मचारियों को परिभाषित श्रेणियों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाएगा, जो भारतीय रेलवे के विभिन्न कार्यात्मक क्षेत्रों में पेशेवर उत्कृष्टता, समर्पण और प्रभावशाली योगदान को दर्शाता है।

**बेहतरीन खेल प्रदर्शन का भी सम्मान**

रेलवे अपने 2 खिलाड़ियों को भी अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार-2025 से सम्मानित करेगा, जिन्होंने खेलों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की है और भारतीय रेलवे का नाम रोशन किया है।

**व्यक्तिगत सम्मान से परे**

व्यक्तिगत सम्मान के अलावा, अलग-अलग श्रेणियों में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले रेल मंडलों को 26 शील्ड प्रदान किए जाएंगे, जो उनकी शानदार उपलब्धियों और कुल मिलाकर बेहतरीन प्रदर्शन को पहचान देंगे।

सम्मानित होने वालों में ऐसे रेल कर्मचारी शामिल हैं जिन्होंने महाकुंभ जैसे बड़े आयोजनों के दौरान सुरक्षित और बिना किसी व्यवधान के रेलवे संचालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान रेल कर्मियों के विशेष योगदान को भी सम्मान मिलेगा जिन्होंने मुश्किल परिस्थितियों में भी रेलवे संचालन और जनता को राहत सुनिश्चित की। साथ ही ऐसे कर्मी भी सम्मानित सोची में हैं जिन्होंने मुश्किल सेक्शन में एडवांस्ड बैलास्ट क्लीनिंग मशीनों को पेश किया, जिससे ट्रैक सुरक्षा, यात्रा की गुणवत्ता और लंबे समय तक रखरखाव की दक्षता में काफी सुधार हुआ। यह पुरस्कार समारोह भारतीय रेलवे के समर्पण, उच्च व्यावसायिकता और अनुकरणीय सेवा को पहचानने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, साथ ही एक सुरक्षित, अधिक कुशल और यात्री-केंद्रित रेल प्रणाली बनाने में अपने कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों का उत्सव भी मनाता है।

## मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने क्रेडाई अहमदाबाद-गाइहेड के 20वें भव्य प्रॉपर्टी शो-ओलंपियाड का उद्घाटन किया

### कैबिनेट मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया की प्रेरक उपस्थिति

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को क्रेडाई अहमदाबाद-गाइहेड (गुजरात इंस्टीट्यूट ऑफ हाउसिंग एंड एस्टेट डेवलपर्स) के 20वें भव्य प्रॉपर्टी शो-ओलम्पियाड का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 'आ अमदावाद नो दसको छे' फिल्म की लॉन्चिंग की और फिल्म देखी। कार्यक्रम में वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया भी मौजूद रहे।

अहमदाबाद के जीएमडीसी मैदान पर 9,10 और 11 जनवरी, 2026 को आयोजित होने वाले इस प्रॉपर्टी शो का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि आज का दिन राज्य और देश के लिए ऐतिहासिक है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में आज 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' की शुरुआत हुई है, जो भारत की अडिग श्रद्धा, संस्कृति और गौरव का प्रतीक है।

**मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-**

- आज का दिन राज्य और देश के लिए ऐतिहासिक : आज से 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' की भव्य शुरुआत
- प्रॉपर्टी, इंफ्रास्ट्रक्चर और उद्योग क्षेत्र में हो रही प्रगति से राज्य की आर्थिक शक्ति और मजबूत होगी

मुख्यमंत्री ने कहा कि सोमनाथ मंदिर केवल एक धार्मिक स्थान ही नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास और स्वाभिमान का प्रतीक भी है। इतिहास में अनेकों बार इस देश की संस्कृति को तोड़ने का प्रयास किया गया, लेकिन भारत ने हमेशा उससे उबरकर दुनिया भर में अपना डंका बजाया है। आज भारत जिस प्रकार वैश्विक स्तर पर गौरव के साथ आगे बढ़ रहा है, उसका मुख्य कारण प्रधानमंत्री का मजबूत और दूरदर्शी नेतृत्व है। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री ने सदैव ही विकास के साथ-साथ विरासत के संरक्षण पर जोर दिया है। मंदिर हमारी आस्था और श्रद्धा के केंद्र हैं, लेकिन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निरंतरता, प्रामाणिकता और संकल्प को बरकरार रखना भी हमारी संस्कृति की शक्ति है। जिसने निरंतरता को बनाए रखा, वह व्यक्ति या संस्थान हरेक चुनौती से बाहर आकर आगे बढ़ता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने सेवा दायित्व संभालने के बाद पहली कैबिनेट बैठक में गरीब और आमजन के लिए पक्के मकान की योजना को स्वीकृति दी, जो उनकी संवेदनशीलता और जनकेंद्रित नेतृत्व का उत्तम उदाहरण है। आज सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ बन रहे आवासों से आमजन का जीवन सुख-सुविधा युक्त हो गया है।

अहमदाबाद के विकास को लेकर मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले दशक में अहमदाबाद कई गुना विकास करेगा। प्रॉपर्टी, इंफ्रास्ट्रक्चर और उद्योग क्षेत्र में हो रही प्रगति से राज्य की आर्थिक शक्ति और मजबूत होगी। सरकार के रूप में हमें गर्व है कि अहमदाबाद और गुजरात विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे पर मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्लोबल वॉर्मिंग जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए बरसाती पानी का संग्रहण, भूगर्भ जल संरक्षण और ऊर्जा की बचत जैसे उपायों को आज से ही अमल में लाना जरूरी है। पर्यावरण के संरक्षण के साथ विकास करना ही विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग है।

मुख्यमंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत का स्वप्न साकार करने में विकसित गुजरात की भूमिका महत्वपूर्ण है और राज्य सरकार इस दिशा में लगातार प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रही है। कार्यक्रम में महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन, भारतीय रियल एस्टेट डेवलपर्स संघों का परिसंघ (क्रेडाई) के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शेखरभाई पटेल, श्री आलापभाई पटेल, भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) के अध्यक्ष श्री जक्षय शाह, गाईहेड के पदाधिकारी, रीयल एस्टेट क्षेत्र के उद्योगपति, डेवलपर्स, निवेशक और बड़ी संख्या में नगरजन उपस्थित रहे।

## सोमनाथ स्वाभिमान पर्व – भारत के अखंड स्वाभिमान की अभिव्यक्ति

- सोमनाथ मंदिर में स्थित बाणस्तंभ भारत की वैज्ञानिक दृष्टि, भूगोलीय समझ एवं अडिग आत्मविश्वास का प्रतीक
- बाणस्तंभ पर अंकित शिलालेख के अनुसार यहाँ से दक्षिण दिशा में पृथ्वी के अंत तक कोई भूखंड नहीं है
- इस पर्व अंतर्गत सोमनाथ में सहभागी होने वाले आगंतुकों के लिए जानने योग्य इतिहास

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित होने वाला सोमनाथ स्वाभिमान पर्व भारत की हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति की अखंड धारा को वर्तमान एवं भविष्य के साथ जोड़ने वाला राष्ट्रीय संकल्प बनेना। ऐसे में सोमनाथ मंदिर की भव्यता के साथ वर्षों पुराना इतिहास गुँथा हुआ है। भारत की सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चेतना में सोमनाथ मंदिर केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि अखंड आस्था, राष्ट्रीय अस्मिता तथा संस्कृति के पुनरुत्थान का जीवंत प्रतीक है। भारत की प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा तथा राष्ट्रीय गौरव के जीवंत केन्द्र सोमनाथ मंदिर में आयोजित सोमनाथ स्वाभिमान पर्व भारत के ऐतिहासिक स्वाभिमान तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान की सशक्त अभिव्यक्ति समान कार्यक्रम है। इस पर्व के परिप्रेक्ष्य में मंदिर परिसर में स्थित बाणस्तंभ का विशेष ऐतिहासिक एवं प्रतीकात्मक महत्व उजागर होता है। सोमनाथ मंदिर के प्रांगण में अरब सागराभिमुख बाणस्तंभ प्राचीन भारत की वैज्ञानिक दृष्टि, भूगोलीय समझ तथा अडिग आत्मविश्वास का प्रतीक है। बाणस्तंभ पर अंकित संस्कृत शिलालेख के अनुसार (आसमुद्रांत दक्षिण ध्रुव, पर्यंत अबाधित ज्योतिर्मार्ग) यहाँ से दक्षिण दिशा में पृथ्वी के अंत तक कोई भूखंड-भूमि नहीं है, जो तत्कालीन भारत के विद्वानों की विकसित भूगोलीय समझ को दर्शाता है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत बाणस्तंभ भारत के अखंड स्वाभिमान, अविरत संस्कृति तथा पुनर्जागृति के संदेश का प्रतीक है। आक्रांताओं के बारम्बार आक्रमणों और विध्वंस के बाद भी सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण तथा उससे जुड़ी विरासत भारत की अविचल आस्था तथा आत्मसम्मान को प्रतिबिंबित करते हैं। सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण से लेकर प्रधानमंत्री के दृढ़संकल्प समान स्वाभिमान पर्व तक की यात्रा भारत की सांस्कृतिक पुनर्स्थापना की साक्षी है। इस परंपरा को अधिक मजबूती देते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सोमनाथ के प्रति व्यक्त अटूट आस्था व सम्मान राष्ट्रीय चेतना को नई ऊँचाई देते हैं। उनके नेतृत्व में समग्र देश में ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण और प्रचार को विशेष प्राथमिकता दी गई है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत बाणस्तंभ का स्मरण नई पीढ़ी को भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के साथ जोड़ता है और आत्मविश्वास, वैज्ञानिक विचार तथा राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है। यह पर्व केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि भारत के अखंड स्वाभिमान, संस्कृति एवं राष्ट्र भावना की जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में विशेष महत्व रखता है।

## सोमनाथ महादेव मंदिर परिसर में आयोजित हुआ भव्यातिभव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिव आराधना के गीतों के साथ शिव भक्ति के रंग में रंगे दर्शक

- सांस्कृतिक कार्यक्रम में मंत्रियों श्री जीतूभाई वाघाणी, डॉ. प्रद्युमन वाजा तथा श्री कौशिक वेकरिया की उपस्थिति
- नगर में जोगी आया.... अगड़ बम, अगड़ बम..., हर हर महादेव... गीतों के नाद से गूंज उठा सोमनाथ ज्योतिर्लिंग देवालय
- सर्वश्री कीर्तिदान गढवी, जिगरदान गढवी तथा उमेश बारोट ने हमारी संस्कृति एवं सनातन धर्म के अहोभाव के साथ संगीत के सुर छेड़े, सांईराम दवे ने साहित्य की प्रस्तुति की

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के प्रथम दिन गुरुवार को सोमनाथ महादेव मंदिर परिसर में भव्यातिभव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, डॉ. प्रद्युमन वाजा तथा श्री कौशिक वेकरिया सहित महानुभाव सहभागी हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में गुजरात के विख्यात कलाकारों श्री कीर्तिदान गढवी, श्री जिगरदान गढवी तथा श्री उमेश बारोट ने सोमनाथ महादेव की आराधना तथा भजनों के साथ हमारी संस्कृति, धरोहर एवं सनातन धर्म को संगीत के सुरों में पिरोकर अहोभाव के साथ शिव भक्ति में तर-ब-तर करने वाले गीतों की धूम मचाई। उपस्थित दर्शक मंत्रमुग्ध होकर शिव भक्ति में लीन बने और संगीत में झूमे। दर्शकों ने भी आत्मीयता से इस कार्यक्रम से जुड़कर शिव भक्ति के अनेक गीतों के साथ तालियाँ बजाकर कलाकारों के सुर में सुर मिलाया। सांईराम दवे ने साहित्य की प्रस्तुति के साथ सोमनाथ महादेव की स्थापना, विदेशी आक्रमणों, हमारे योद्धाओं और आज भी अडिग-अविचल इस सोमनाथ मंदिर तथा हमारी ऐतिहासिक धरोहर के विषय में वर्णन किया। कर्णप्रिय संगीत, रोशनी से जगमगा उठा मंदिर परिसर और निहार-निहार कर भी मन न भरे; ऐसा अलौकिक सोमनाथ ज्योतिर्लिंग का देवालय, इस त्रिवेणी संगम से मानो दिव्य वातावरण का सृजन हुआ। कलाकारों ने शिव भक्ति के गीतों के साथ गरबा गीतों की धूम मचाई। इस अवसर पर सांसद श्री राजेशभाई चुडासमा, विधायक श्री भगवानभाई बारड, पूर्व सांसद श्री मोहनभाई कुंडारिया, सचिव श्री आलोक पांडे, टी. नागराजन, दिलीप राणा, गीर सोमनाथ जिला कलेक्टर श्री आई. ए. उपाध्याय आदि भी उपस्थित रहे।

**सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। 9 जनवरी को सर्वश्री राजभा गढवी, कीर्ति सागठिया व हार्दिक दवे तथा 10 जनवरी को सर्वश्री हंसराज रघुवंशी, ब्रिजराज गढवी व मयूर दवे आदि कलाकारों के कार्यक्रम आयोजित होने वाले हैं। ऐसे में गीर सोमनाथ जिला प्रशासन द्वारा सोमनाथ दर्शन को आने वाले श्रद्धालुओं तथा सोमनाथवासियों से इन कार्यक्रमों को देखने आने का अनुरोध किया गया है।**

## मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी भावनगर को दान की गई कैंसर स्क्रीनिंग वैन का लोकार्पण किया

### प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'हेल्थ एंड वेलनेस फॉर ऑल' के ध्येय को मिलेगी और अधिक तेजी

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को गांधीनगर में कैंसर की शुरुआती पहचान और जांच के लिए महत्वपूर्ण कैंसर स्क्रीनिंग वैन-'आशा वैन' का लोकार्पण किया।

जेनवर्क फार्मास्युटिकल की ओर से इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी की भावनगर शाखा को दान के रूप में यह आशा वैन भेंट की गई है।

यह वैन ईवीए-प्रो डायग्नोस्टिक्स, मैमोग्राफी यूनिट और विशेषज्ञ टेली परामर्श से सुसज्जित है।

इतना ही नहीं, इस वैन के जरिए किसी भी स्थान पर अल्ट्रा मॉडर्न उपकरणों की मदद से विशेष रूप से फेफड़ों के कैंसर, मुंह के कैंसर, ब्लड कैंसर, सर्वाइकल कैंसर, पैंक्रियाटिक कैंसर, लीवर कैंसर और ब्रेस्ट एंड प्रोस्टेट कैंसर जैसे रोगों का निदान किया जा सकेगा।

यह वैन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'हेल्थ एंड वेलनेस फॉर ऑल' के उदार ध्येय को ग्रामीण स्तर पर और अधिक गति देने में उपयुक्त साबित होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 10 प्रकार के कैंसर रोगों के लिए स्क्रीनिंग वैन को इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी की भावनगर शाखा को जनसेवा के लिए सौंपा। इस अवसर पर जेनबर्क फार्मा के प्रबंध निदेशक श्री आशीष भूता और इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी भावनगर शाखा के पदाधिकारी मौजूद रहे।

# प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 11 जनवरी को 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में होंगे शामिल, उनके नेतृत्व में आदि ज्योतिर्लिंग सोमनाथ का 'स्वर्णिम युग' आया

- हर वर्ष लगभग 97 लाख श्रद्धालु सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन करते हैं, महाशिवरात्रि-2025 में ही 3.56 लाख भक्त पहुँचे
- फोर लेन हाईवे, साबरमती-वेरावळ वंदे भारत, केशोद तथा राजकोट एयरपोर्ट से सोमनाथ बना वैश्विक प्रवेश द्वार
- सोमनाथ की गाथा का वर्णन करने वाले लाइट एंड साउंड शो ने पिछले तीन वर्ष में 10 लाख से अधिक आगंतुकों को आकर्षित किया
- नेट-जीरो मंदिर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है 'स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस' सोमनाथ
- गूगल पर भारतीयों द्वारा सर्वाधिक सर्च किए गए शीर्षस्थ 10 स्थानों में सोमनाथ शामिल

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : 'सौराष्ट्रे सोमनाथं च, श्री शैले मल्लिकार्जुनम्, उज्जयिन्यां महाकालम् ॐ कारम अमलेश्वरम्।' द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम की यह पंक्ति दर्शाती है कि जब भारत के 12 पवित्र ज्योतिर्लिंगों का वर्णन होता है, तब सबसे पहले सोमनाथ का उल्लेख आता है। यह भारत की संस्कृति में सोमनाथ का अग्रिम स्थान तथा उसके अविनाशी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व को दर्शाता है। पिछले दो दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सोमनाथ मंदिर 'स्वर्णिम युग' में प्रविष्ट हुआ है। उनके श्री सोमनाथ ट्रस्ट का अध्यक्ष बनने के बाद से सोमनाथ के विकास में एक नया अध्याय शुरू हुआ है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2026 में महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ पर 1026 में किए गए प्रथम आक्रमण के हजार वर्ष पूर्ण होंगे। आज एक हजार वर्षों के बाद भी सोमनाथ मंदिर पूर्ण गौरव के साथ अडिग खड़ा है। संयोग से 2026 में ही सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। 11 मई, 1951 को इस भव्य मंदिर का पुनर्निर्माण संपन्न हुआ था और फिर यह भक्तों के लिए खुला था। इस सीमाचिह्न समान घटना को और विशेष बनाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 11 जनवरी को सोमनाथ की यात्रा पर आएंगे और 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में उपस्थिति देंगे।

## सोमनाथ : भक्ति एवं भव्यता का संगम

शिखर पर 1,666 स्वर्ण कलशों तथा 14,200 ध्वजाओं के साथ सोमनाथ मंदिर तीन पीढ़ियों की अडिग श्रद्धा, दृढ़ता तथा कलात्मकता के प्रतिबिंब के रूप में खड़ा है। हर वर्ष लाखों लोग इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए आते हैं। वर्ष 2020 से 2024 तक वार्षिक अनुमानित 97 लाख श्रद्धालु सोमनाथ के दर्शन के लिए आए हैं। बिल्व पूजा के लिए पिछले 2 वर्ष में श्रद्धालुओं की संख्या 13.77 लाख दर्ज हुई थी, पिछले 2 वर्ष में श्रद्धालुओं की संख्या 13.77 लाख दर्ज हुई थी, जिसमें महाशिवरात्रि-2025 के दौरान 3.56 लाख श्रद्धालु आए थे। आज ऑनलाइन बुकिंग तथा पोस्टल प्रसादी की सुविधा यह सुनिश्चित करती है कि सोमनाथ की पवित्रता मंदिर की सीमाओं को पारकर सभी भक्तों तक पहुँचे।

## आस्था के साथ उत्सव का केन्द्र है सोमनाथ यात्राधाम

सोमनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं के लिए लाइट एंड साउंड शो तथा उत्सवों का आकर्षण भी रहा है। पिछले 3 वर्ष में 10 लाख से अधिक लोगों ने सोमनाथ की गाथा का वर्णन करने वाला लाइट एंड साउंड शो को देखा है। सोमनाथ प्रांगण में मनाए जा रहे उत्सव की बात करें, तो गत वर्ष वंदे सोमनाथ कला महोत्सव में 1,500 वर्ष पुरानी नृत्य परंपराएँ पुनर्जीवित हुई थीं, जो दर्शाता है कि सोमनाथ केवल आस्था का केन्द्र नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को भी उजागर करता है।

## भारतीयों द्वारा सर्वाधिक सर्च किए गए शीर्षस्थ 10 स्थानों में सोमनाथ शामिल

गूगल पर भारतीयों द्वारा सर्वाधिक सर्च किए गए शीर्षस्थ 10 स्थानों में सोमनाथ शामिल है। इसके अलावा, 2025 में सोमनाथ की सोशल मीडिया इम्प्रेशन 1.37 अरब को पार कर गई है, जो विश्वभर के भक्तों में सोमनाथ के प्रति श्रद्धा एवं आध्यात्मिक महत्व को दर्शाती है। भारत की आस्था तथा स्वाभिमान का प्रतीक सोमनाथ मंदिर विकसित भारत के निर्माण के लिए भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल देते हुए लिखा था, "यदि हजार वर्ष पहले खंडित हुआ सोमनाथ मंदिर संपूर्ण वैभव के साथ पुनः खड़ा हो सकता है, तो हम हजार वर्ष पहले वाला समृद्ध भारत भी पुनः बना सकते हैं।"

## नेट-जीरो मंदिर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है सोमनाथ

वर्ष 2018 में 'स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस' के रूप में मान्यता प्राप्त करने वाला सोमनाथ आज टिकाऊ विकास तथा नवाचार का उत्तम उदाहरण बना है। वेस्ट सेग्रिगेशन केन्द्रों में अब मंदिर के फूलों को वर्मीकम्पोस्ट में रूपांतरित कर उसका उपयोग 1,700 बिल्व वृक्षों के संवर्धन में होता है। मिशन लाइफ पहल अंतर्गत प्लास्टिक कूड़े से प्रतिमाह पेवर ब्लॉक्स तैयार किए जाते हैं। यहाँ हर महीने लगभग 4,700 प्लास्टिक-फ्लाई एश ब्लॉक्स का उत्पादन किया जाएगा, जो स्थानीय महिला स्वयं-सहायता समूहों के लिए आय सृजित करेगा तथा वार्षिक 125 टन प्लास्टिक रिसाइकिल करेगा। 62 लाख रुपए की लागत से पुनर्स्थापित किए गए छह वर्षा जल संग्रह कुएँ तथा एक जलाशय हर महीने लगभग 30 लाख लीटर सीवेज जल को शुद्ध करते हैं, जिसका उपयोग वनीकरण के लिए किया जाता है, जबकि 2019-20 में 160 लाख रुपए के निवेश से स्थापित आठ सीवेज शुद्धिकरण प्लांट्स ने कृषि एवं लैंडस्केप सिंचाई के लिए 20.53 करोड़ लीटर पानी फिल्टर किया है। 72,000 वर्ग फीट क्षेत्र में विकसित तथा 7,200 पेड़ों से समृद्ध मियावाकी वन समुद्री तथा क्षारीय हवाओं से रक्षा देता है। आईआईटी-कानपुर के अध्ययन के अनुसार यह वन दो वर्ष बाद वार्षिक 93,000 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड शोषित करेगा। इतना ही नहीं; ट्रस्ट द्वारा सेवा भाव से अभिषेक का पवित्र जल नौ स्तरीय शुद्धिकरण प्लांट द्वारा शुद्ध करके 'सोम गंगाजल' के रूप में 15 रुपए में वितरित किया जाता है। दिसंबर-2024 तक 1.13 लाख से अधिक परिवारों को इसका लाभ मिला है। इन सभी प्रयासों द्वारा सोमनाथ नेट-जीरो मंदिर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

## आधुनिक परिवहन सेवाएँ तथा वैश्विक कनेक्टिविटी

सोमनाथ की यात्रा भक्तों के लिए अधिक सरल तथा आरामदायक बने; इस उद्देश्य से कनेक्टिविटी में महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। 828 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट 'जेतपुर-सोमनाथ फोर लेन हाईवे' के कारण यात्रियों-श्रद्धालुओं को एक्सप्रेस वे की सुविधा मिली है। साबरमती-वेरावळ वंदे भारत एक्सप्रेस के कारण अहमदाबाद से सोमनाथ की यात्रा अब अधिक तेज एवं सुलभ बनी है। इसके अलावा, वर्ष 2022 में पुनः शुरू किए गए केशोद एयरपोर्ट तथा 2023 में राजकोट अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के उद्घाटन के बाद अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए सोमनाथ पहुँचना सुलभ बना है।

# कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर छठी लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

**(जीएनएस)।** पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली सेक्शन के बीच छठी लाइन के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसंबर, 2025 की रात से 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है, जो 18 जनवरी, 2026 तक जारी रहेगा। इस ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेन सेवाएं प्रभावित होंगी।

**आंशिक निरस्त होने वाली ट्रेनें:**

▸▸10 जनवरी, 2026 की ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस वसई रोड पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इस प्रकार यह ट्रेन वसई रोड-बोरीवली के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

▸▸11 जनवरी, 2026 की ट्रेन संख्या 19417 बोरीवली–अहमदाबाद एक्सप्रेस वसई रोड से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इस प्रकार यह ट्रेन बोरीवली-वसई रोड के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

**री-शेड्यूल होने वाली ट्रेनें:**

▸▸10 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12902 अहमदाबाद–दादर एक्सप्रेस अपने मार्ग में 20 मिनट री-शेड्यूल होगी।

▸▸10 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19218 वेरावल–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 45 मिनट री-शेड्यूल होगी, अर्थात यह ट्रेन वेरावल से 12:35 बजे प्रस्थान करेगी।

▸▸11 जनवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 22953 मुंबई सेंट्रल–अहमदाबाद गुजरात सुपरफास्ट एक्सप्रेस 30 मिनट री-शेड्यूल होगी, अर्थात यह ट्रेन 06:10 बजे प्रस्थान करेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बनाएं।

# उत्तर पश्चिम रेलवे के किशनगढ़ स्टेशन पर पोरबंदर मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस को मिला अतिरिक्त ठहराव

**(जीएनएस)।** उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार अजमेर एवं जयपुर मंडल के अंतर्गत कुछ ट्रेनों को प्रायोगिक आधार पर अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है। इसी क्रम में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल से संचालित ट्रेन संख्या 19269 / 19270 पोरबंदर–मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस को राजस्थान के किशनगढ़ स्टेशन पर ठहराव प्रदान किया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस ठहराव का विवरण निम्नानुसार है—

▸▸ट्रेन संख्या 19269 पोरबंदर–मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस, जो पोरबंदर से दिनांक 09 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका किशनगढ़ स्टेशन पर आगमन समय 12:22 बजे तथा प्रस्थान समय 12:24 बजे रहेगा।

▸▸इसी प्रकार ट्रेन संख्या 19270 मुजफ्फरपुर–पोरबंदर एक्सप्रेस, जो मुजफ्फरपुर से दिनांक 11 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका किशनगढ़ स्टेशन पर आगमन समय 20:11 बजे तथा प्रस्थान समय 20:13 बजे निर्धारित किया गया है।

▸▸यह ठहराव प्रायोगिक आधार पर प्रदान किया गया है, जो अगले आदेश तक प्रभावी रहेगा। इस अतिरिक्त ठहराव से किशनगढ़ एवं आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को आवागमन में उल्लेखनीय सुविधा प्राप्त होगी।

# प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का प्रारंभ

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत गुरुवार को गांधीनगर स्थित प्राचीन और प्रसिद्ध धोळेश्वर महादेव मंदिर से 72 घंटे के सामूहिक ओमकार नाद का प्रारंभ कराया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से इस सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का तीन दिवसीय उत्सव गुरुवार से प्रारंभ हो गया है। आज से 1000 वर्ष पहले 1026 में सोमनाथ मंदिर पर हुए हमले के विरुद्ध अटूट श्रद्धा, आस्था और सामूहिक शक्ति के संकल्प से आज सोमनाथ मंदिर भव्यता और दिव्यता के प्रतीक के रूप में अडिगता से खड़ा है। इस पराक्रम और करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का गौरव-महात्म्य प्रधानमंत्री की प्रेरणा और मार्गदर्शन में हो रहे सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के माध्यम से हो रहा है। इस पर्व में ओमकार नाद की ऊर्जा को सामूहिक ओमकार नाद से जोड़ने के लिए मंदिरों में 72 घंटे की ओमकार नाद की गूंज से भक्तिमय वातावरण का निर्माण होगा। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल भी गांधीनगर स्थित धोळेश्वर महादेव से इस ओमकार नाद में श्रद्धापूर्वक शामिल हुए। उन्होंने सभी से इस सामूहिक ओमकार नाद में सहभागी होने का अनुरोध करते हुए कहा कि हम सभी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अपनी विरासत और अस्मिता के गौरव को और अधिक उजागर करने का अवसर मिला है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने लोगों से मंदिरों-देवालयों में होने वाले सामूहिक ओमकार नाद या अपने घर पर भी समय मिलने पर ओमकार मंत्र का स्मरण कर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में जुड़ने की अपील की।

## सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

# केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत सोमनाथ में बैठक की

- प्रधानमंत्री के कार्यक्रम की तैयारियों के संबंध में केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने समीक्षा की
- प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी सहित महानुभावों की उपस्थिति
- केंद्रीय मंत्री ने शौर्य यात्रा के रूट शंख सर्कल से हमीरजी गोहिल प्रतिमा सहित सोमनाथ परिसर का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया
- अविनाशी सनातन संस्कृति और अटूट आस्था का प्रतीक है प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ : केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग की भूमि पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 10 और 11 जनवरी को 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में सहभागी होने के लिए पधारने वाले हैं। इस अवसर पर केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने गुरुवार को प्रधानमंत्री के सोमनाथ प्रवास तथा शौर्य यात्रा के रूट सहित विभिन्न कार्यक्रमों को लेकर स्थल समीक्षा की तथा अन्य तैयारियों का विवरण प्राप्त किया। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सोमनाथ महादेव के समक्ष शीश झुकाने के बाद 'सागर दर्शन' में एक बैठक आयोजित की और 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' अंतर्गत 8, 9 और 10 जनवरी को आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित अन्य तैयारियों के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की। सागर दर्शन में आयोजित बैठक पूर्ण होने के पश्चात केंद्रीय मंत्री ने शौर्य यात्रा के रूट शंख सर्कल से हमीरजी गोहिल प्रतिमा तक तथा वहाँ से मंदिर परिसर तक के स्थलों का मंत्रियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया।

केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ देश के करोड़ों लोगों के लिए आस्था का प्रतीक है। सोमनाथ अविनाशी-शाश्वत सनातन संस्कृति और अटूट आस्था का प्रतीक है। तलवार की ताकत के बल पर सनातन को मिटाने का प्रयास किया गया, लेकिन उसमें असफलता मिली और सनातन की शक्ति में उतरोत्तर वृद्धि होती रही है।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि गजनवी ने सोमनाथ पर आक्रमण किया, लेकिन विध्वंस के सामने निर्माण की शक्ति विजयी हुई। सोमनाथ पर बार-बार हुए आक्रमणों के बावजूद वह सनातन, अखंड और अविनाशी बना रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से भविष्य की पीढ़ी को भी सनातन संस्कृति और भारत की प्राचीन धरोहर की पहचान मिले तथा वीरों के बलिदान और योगदान की गाथाओं की जानकारी मिले; इस दिशा में कार्य किया जा रहा है ।

सोमनाथ पर गजनवी के आक्रमण के 1000 वर्ष और मंदिर के जीर्णोद्धार के 75 वर्ष का शुभ समन्वय स्थापित हुआ है। जिन शक्तियों ने भारत में अविनाशी चेतना को मिटाने का प्रयास किया था, उनके प्रयास पूरी तरह विफल रहे। इस प्रकार सोमनाथ अटूट आस्था का केंद्र और सांस्कृतिक धरोहरों के पुनर्जागरण का केंद्र बना है।

उल्लेखनीय है कि 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' के अंतर्गत 08, 09 और 10 जनवरी को आयोजित तीन दिवसीय महोत्सव में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित शौर्य यात्रा का भी आयोजन किया गया है।

# सोमनाथ महादेव मंदिर परिसर में शंखनाद के साथ 72 घंटे के अखंड ॐकार जाप का भव्य शुभारंभ

- केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, शिक्षा मंत्री श्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा की उपस्थिति में हुआ दिव्य शुभारंभ
- गगनभेदी शंखनाद के साथ 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का शुभारंभ
- गुजरात भर से आए 2500 ऋषि कुमारों-ब्राह्मणों द्वारा भव्य जाप प्रारंभ किए जाने पर अरब सागर तट पर अद्भुत आध्यात्मिक चेतना की अनुभूति; देशभर से आए श्रद्धालु भी ॐकार मंत्रोच्चार में मंत्रमुग्ध हुए
- अग्निदेवता की साक्षी में सोमनाथ में गूंजा अखंड ॐकारनाद
- सोमनाथ महादेव के साथ देशभर के शिवालय ॐकार मंत्र जाप से गूंज उठे

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : समग्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ मंदिर में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' मनाया जा रहा है। इसके अंतर्गत 8 जनवरी की सुबह सोमनाथ महादेव के समक्ष भव्य एवं दिव्य 72 घंटे के अखंड ॐकार जाप मंत्रोच्चार का शुभारंभ हुआ। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत की उपस्थिति में गगनभेदी शंखनाद, भगवान शिव को प्रिय तालवाद्य डमरू के नाद तथा अखंड ॐकार की गूंज के साथ 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का शुभारंभ हुआ। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत सहित कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा एवं जूनागढ़ के सांसद राजेशभाई चुडासमा ने शंखनाद में सहभागिता कर 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का शुभारंभ कराया। स्वयं के अंतर का नाद अर्थात ॐकार स्व में तल्लीन कर परम चेतना को जाग्रत करने वाला नाद है ॐकारनाद। 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' अंतर्गत गुजरात भर से सोमनाथ पधारे हुए लगभग 2500 ऋषि कुमारों द्वारा 72 घंटे तक अखंड ॐकार नाद गूंजेगा, जिसका प्रथम सत्र भव्य रूप से प्रारंभ हुआ। इसके साथ ही सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात सहित देशभर के शिवालयों में भी 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' के अंतर्गत ॐकार जाप का पाठ किया गया।

पवित्र अग्नि की साक्षी में शंखनाद, डमरू के नाद और ऋषि कुमारों द्वारा निरंतर उच्चारित पवित्र ॐकार नाद से समग्र वातावरण आध्यात्मिकता से परिपूर्ण हो गया। ऋषि कुमारों के साथ इस पवित्र ॐकार नाद में श्रद्धालु भी भावपूर्वक सहभागी बने। मंत्रियों ने भी प्रतीक स्वरूप शंख बजाकर ऋषि कुमारों का उत्साहवर्धन किया। केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र शेखावत, मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, मंत्री श्री प्रद्युमनभाई वाजा सहित गणमान्य अतिथियों ने भी ऋषि कुमारों के साथ बैठकर ॐकार जाप किया और शिव भक्तों से इसमें सहभागी होने का अनुरोध किया।

# सोना वायदा में 1184 रुपये और चांदी वायदा में 11626 रुपये की गिरावट: क्रूड ऑयल वायदा में 83 रुपये की वृद्धि

**(जीएनएस)।** मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 198487.48 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 48960.17 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 149523.05 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 35301 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3067.87 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 37268.42 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 137996 रुपये के भाव पर खूलकर, 137996 रुपये के दिन के उच्च और 136443 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 138009 रुपये के पिछले बंद के सामने 1184 रुपये या 0.86 फीसदी लुढ़ककर 136825 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा 1157 रुपये या 1.02 फीसदी गिरकर 111921 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 118 रुपये या 0.84 फीसदी गिरकर 13995 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 137829 रुपये के भाव पर खूलकर, 137829 रुपये के दिन के उच्च और 136400 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1177 रुपये या 0.85 फीसदी गिरकर 136800 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 138897 रुपये के भाव पर खूलकर, 138897 रुपये के दिन के उच्च और 137196 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 138799 रुपये के पिछले बंद के सामने 1191 रुपये या 0.86 फीसदी गिरकर 137608 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

- कमोडिटी वायदाओं में 48960.17 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 149523.05 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 37268.42 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 35301 पॉइंट के स्तर पर

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 251041 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 251889 रुपये और नीचे में 238010 रुपये पर पहुंचकर, 250605 रुपये के पिछले बंद के सामने 11626 रुपये या 4.64 फीसदी गिरकर 238979 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 11471 रुपये या 4.53 फीसदी औंधकर 241600 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 11506 रुपये या 4.55 फीसदी गिरकर 241589 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 7664.00 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा 41.75 रुपये या 3.19 फीसदी घटकर 1266 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 3.05 रुपये या 0.98 फीसदी घटकर 306.6 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 3.5 रुपये या 1.13 फीसदी औंधकर 306.65 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा जनवरी वायदा 2.55 रुपये या 1.32 फीसदी गिरकर 190.25 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 3800.89 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा 5068 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5129 रुपये और नीचे में 5055 रुपये पर पहुंचकर, 83 रुपये या 1.65 फीसदी बढ़कर 5124 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा 79 रुपये या 1.57 फीसदी की मजबूती के साथ 5124 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 324.2 रुपये के भाव पर खूलकर, 326.6 रुपये के दिन के उच्च और 312.4 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 321.4 रुपये के पिछले बंद के सामने 9 रुपये या 2.8 फीसदी लुढ़ककर 312.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा 8.6 रुपये या 2.68 फीसदी लुढ़ककर 312.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 1000.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 20 पैसे या 0.02 फीसदी चढ़कर 998.8 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13539.19 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 23729.23 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 6375.46 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 491.01 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 182.93 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 564.87 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 790.45 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2998.92 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।